प्रकाशन के अनुसार सच्चाइयाठ

ठल त्मअण ळमवतहम स्मवद च्पामै तण

यह संदेश मुफ्त बाटने के लिए तैयार किया गया हैं। अधिक किताब के लिए सम्भव हो तो नीचे लिखे गये पते पर इंग्लिश में लिखे, कि कितना आप इस्तेमाल करता चाहते हैं।

Published By

Grace Temple
1235 Locklin Rd
Monroe, GA 30655 USA
Web: www.GraceTempleOnline.org
Email: info@GraceTempleOnline.org

HIN9913T • Hindi • Revelational Truths

http://www.transology.info/tracts/hin9913t.htm

प्रकाशन के अनुसार सच्चाइयाठ

मैं आपके साथ एक विषय पर खुद विचार-विमर्श करना चाहता हूठ, जो मनुष्यों के उद्धार से सम्बन्धित उनकी आत्मा या कल्याण के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। यह विषय पवित्र आत्मा की परिपूर्णता और बपतिस्मे की आवश्यकता से सम्बन्धित हैं।

परमेश्वर का वचन जो आज्ञा और नियम पर नियम के रुप में हैं, इस आवश्यक और उत्कृष्ट अनुभव की पतिज्ञा पानी के बपतिस्मा के द्वारा प्राप्त होती हैं।

इसलिए, इस विषय को उचित रीति से समझने का उपाय प्रेरितों के काम के दूसरे अध्याय में स्पष्ट रीति से वर्णन किया गया हैं, क्योंकि इसमें इस विषय के प्रति परमेश्वर का लगाव देखने को मिलता हैं।

प्रेरित पतरस, जिसे मसीह ने यहूदियों और अन्यजातियों के लिए स्वर्ग राज्य में प्रवेश करने का द्वार खोलने के लिए चुना, उसने अपने अधिकार का प्रयोग करके लोगों के सामने समय के साथ सच्चाई का वर्णन करने के द्वारा शैतान के राज्य के विरुद्ध प्रभावशाली आक्रमण किया और स्पष्ट किया कि परमेश्वर की योजना में पापों से पश्चाताप, पानी का बपतिस्मा और पवित्र आत्मा की परिपूर्णता आवश्यक हैं, और इस समझ के साथ मसीह में इसे पालन करने का आदेश दिया।

खुद लोग आपको यह विश्वास दिलाने का प्रयास करेंगे कि उद्धार प्राप्त करने के कार्य में पवित्र आत्मा की परिपूर्णता की आवश्यकता का कोई महत्व नहीं। वे आपको यह विश्वास दिलाना चाहेंगे कि उद्धार प्राप्त करने के लिए आप में केवल इच्छा होनी चाहिये। परन्तु प्रेरित पौलुस ने कहा, कि यदि आप में इच्छा पाई जाती है तो आपको आज्ञा का पालन करना आवश्यक हैं।

बपतिस्मा के तीन रुप हैं, जिसका उल्लेख पौलुस बपतिस्मे के सिद्धान्त के रुप में करता हैं। बपतिस्मे के इन रुपों का सम्बन्ध परमेश्वर की शिक्षा के साथ हैं, कहने का तात्पर्य यह है कि, वे एक में तीन हैं। परमेश्वर अर्थात् पवित्र आत्मा की उत्पति के सम्बन्ध में यह मानवीय विचारधारा है, पर हम यह जानते हैं की कोई उत्पति नहीं, क्योंकि वह था, और है और सर्वदा रहेगा, और उसे हम पर परमेश्वर पिता के रुप में प्रकट किया गया हैं, जो अनन्त आत्मा है या जो आदि से स्वयं अस्तित्व में हैं।

वचन के रुप में उसके देहधारी होने के बाद, या जैसा कि हम मानवीय अभिव्यक्ति के अनुसार कह सकते हैं कि जब उसने स्वयं को मसीह यीशु में मानवीकरण किया तब उसके पद के दूसरे चरण में हम ने उसे परमेश्वर के पुत्र के रुप में जाना।

परमेश्वर के विषय में अपने इस वर्णन में तीसरी बात जिसे हम बताना चाहते हैं, वह यह कि, जब हम परमेश्वरत्व को इस तीसरे आयाम में चित्रित करते हैं, तो परमेश्वर को पवित्र आत्मा के रुप में जाना जाता हैं, जहाठ तक मानवीय पहचान और अवधारणा का सम्बन्ध हैं, क्योंकि जब कलवरी पर देहरुपी परदा फट गया या मानवीकरण का शारीरिक कबर खुल गयी तो उसके बाद मानवता की दिव्य आत्मा बाहर निकल जाती है जो भौतिक या मानव स्वरुप के लिए अनुरुप हुआ था।

हमारा सीमित मस्तिष्क, जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर को समझ नहीं सका, अन्त में उस महान निराकार आत्मा को एक मानव रुप में किया गया क्योंकि मसीह में परमेश्वर को उसकी परिपूर्णता के साथ देखा गया।

इसलिए अब हम जान गए हैं कि परमेश्वर देखने में कैसा है और किस प्रकार के जीवन में वह स्वयं को संचालित करता हैं। अन्त में जीवन और मानवता प्रकट कर दी गई हैं। इसलिए हमने मसीह में परमेश्वर के अस्तित्व को जान गये हैं।

इसलिए अब हम जान गए है, कि यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लेना क्यों आवश्यक हैं। पवित्रशास्त्र में ऐसा लिखा हुआ है कि उद्धार के लिए स्वर्ग के नीचे या मनुष्यों में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें। प्रेरितों के काम से सम्बन्धित पवित्रशास्त्र के सभी पद या उदाहरण यह दर्शाते हैं कि उन सभी की शिक्षाऐं एक थी, सभी एक ही दृष्टिकोण से देखते थे, एक ही बात कहते थे, और प्रेरितों की शिक्षा को दृष्टता से जारी रखे हुए थे।

चाहे वह प्रेरितों के काम का आठवाठ अध्याय हो, जहाठ फिलिपुस के द्वारा प्रचार के विषय में लिखा हुआ हैं, या दसवाठ अध्याय हो, जहाठ पतरस के द्वारा प्रचार के विषय में लिखा हुआ हैं, या उनीसवाठ अध्याय हो जहाठ पौलुस के द्वारा प्रचार के विषय में लिखा हुआ हैं, हम इस बात को देखते हैं कि परमेश्वर, के राज्य में प्रवेश पाने के लिए बपतिस्में के सम्बन्ध में सभी प्रेरितों ने यीशु मसीह के नाम पर दबाव दिया।

बपतिस्मा लेने का कारण यह है कि यीशु की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट जाने से हम उसकी मृत्यु का बपतिस्मा पाते हैं। इसलिए, उसके प्रतापी नाम के द्वारा हम उसके पुनरुत्थान की समानता में एक साथ जिलाए जाते हैं। इसलिए, मसीह को पहन लेने के बाद, हम पुराने मनुष्यत्व के पाप से मुक्त हो जाते हैं, जो हम में पाया जाता है, और अब दूसरे अर्थात् पुनर्जीवन मसीह के साथ हमारा सम्बन्ध हो जाता हैं। अब हम पौलुस के साथ यह कह सकते हैं कि अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझमें जीवित हैं, मैं शरीर में अब जो जीवित हूठ तो केवल परमेश्वर के पुत्र के द्वारा जीवित हूठ।

इसलिए, जैसा कि हम देखते हैं कि बपतिस्मे के सिद्धान्त के विषय में पवित्रशास्त्र में जिस रीति से वर्णन किया गया हैं, इसमें सब से पहले पानी का वर्णन किया गया है, जो नूह के समय के जल प्रलय को, या हमारे शारीरिक भागों को दर्शाता हैं। निश्चय, पानी सभी वनस्पतियों

के लिए बचाव का साधन हैं। यह यहूदियों का पूरक हैं, जिनको विरासत स्वाभाविक और पृथ्वी पर की हैं।

दूसरी बात लहू हैं, जो सम्पूर्ण मानव शरीर रचना के लिए बचाव का साधन हैं, ऐसी अवस्था में जब कि लहू में जीवन है, तो अन्यजातियों के लिए विरासत का भागी होने का जो कारण है, वह यह हैं, क्योंकि उनका जीवन ही मुख्य रुप से मानवीय अनुसंधान के द्वारा शारीरिक जीवन की सुरक्षा हैं। निश्चय ही यह बात कलवरी पर बहाए गए लहू को स्पष्ट करती हैं।

तीसरी बात, हमारे अन्दर पवित्र आत्मा हैं, जिसे अन्तिम दिनों में सभी प्राणियों पर उण्डेला जाना था, जिसका आरम्भ पेन्टिकॉस्ट के दिन से हुआ। निश्चय, यह पवित्र लोगों में ;कलीसियाठद्ध की विरासत हैं। इस बात को हम उचित रीति से स्वर्गारोहण के लिए परिभाषित करते हैं, ऐसी स्थिति में हमारी विरासत एक आत्मिक हैं।

इस रीति से, हम तीन बातों को देखते हैं, पानी, आग ;लहूद्ध और आत्मा। एक तो देह के लिए दूसरा प्राण के लिए और तीसरी, आत्मा के लिए हैं। परमेश्वर में पूर्ण करने के लिए ये तीन निश्चित कार्य हैं, परमेश्वर ;देह, प्राण और आत्मा द्ध के कार्य के द्वारा हम उसके स्वरुप में सजाये गए हैं, जिस रीति से एक में तीन अर्थात् पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा है, क्योंकि पवित्रशास्त्र में हमें बताया गया है कि ये तीनों एक हैं।

हमने जो व्यक्त किया है उसके अन्त में हम यह कहना चाहते हैं कि, यद्यपि हम इस बात को अनुभव करते हैं कि पवित्रशास्त्र की समग्रता सम्पूर्ण मानव जाति की आवश्यकताओं की प्रती पूर्तिकर्ता और मार्गदर्शक के रुप में चिन्हित हैं, तथापि, अपने अध्ययन और खोज के मध्य हम एक गंभीर सच्चाई को पाते हैं, अधिकांश लोगों का यह मानना है, कि पुराना नियम जिसमें व्यवस्था पाई जाती हैं वह यहूदियों ;जल, जगत और वनस्पतिद्ध के लिए है जो पितृत्व के युग का अर्थ प्रकट करता हैं। नया नियम जिसमें अनुग्रह पाया जाता है, अन्यजातियों ;लहू का संसारद्ध के लिए है, जो पुत्रत्व को दर्शाता हैं। आत्मिक विधान या नियम, जिसे प्रकाशित वाक्य की पुस्तक के रुप में निर्दिष्ट किया गया है, जिसमें प्रकाशन के अनुसार विश्वास या व्यक्त किया गया परमेश्वर का प्रेम है, जो परमेश्वर के पवित्र लोगों या कलीसिया ;आत्मिक या दिव्य जगतद्ध के लिए है, जो पवित्र आत्मा के युग को दर्शाता हैं।

पहला युग पिता को दर्शाता है, दूसरा युग माठ ;कलवरी पर प्रसव पीड़ाद्ध को दर्शाता है, और तीसरा युग परमेश्वर की सन्तान को दर्शाता है जो हम हैं।

ठल त्मअण ळमवतहम स्ण च्पाम

थ्वनदकमतं दक पितेज च्तमेपकमदज वि श्रमेने बितपेजशे म्जमतदंस ज्ञपदहकवउ वि।इनदकंदज स्पमिए प्दबण

परमेश्वर के लिये पवित्रता